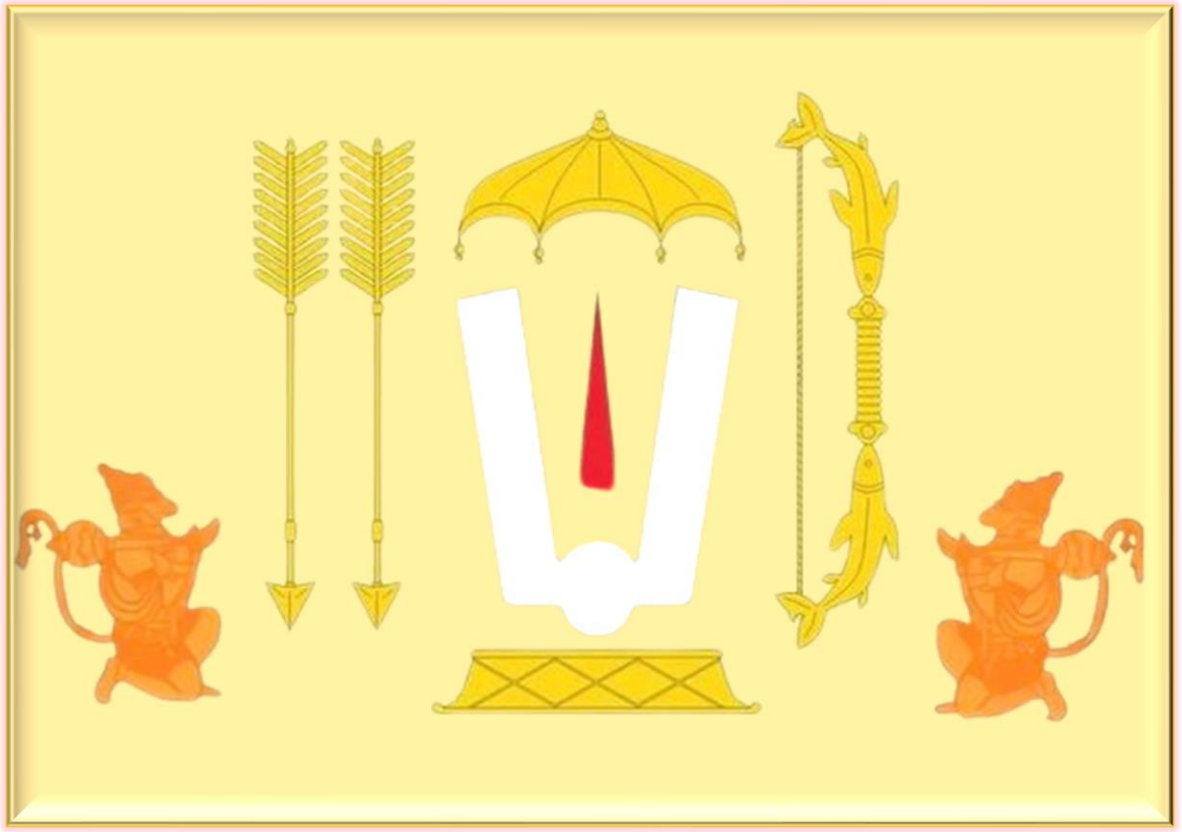




श्रीरामानन्द यशावली

अथ श्रीरामानन्द यशावली प्रारम्भः

श्लोकाः -

रामं कोमलश्यामसुन्दरतनुं पीताम्बरालंकृतम्
कोटीन्दुर्कप्रकाशमानममलं राजीवनेत्रं विभुम् ।
कैशोरं द्विभुजं धनुःशरधरं श्रीसीतया संयुतम्
वन्देऽहं भरतादिबन्धुसहितं राजाधिराजं परम् ॥१॥

फुल्लश्यामसरोजसुन्दरदृशीं सौंदर्यसद्वैभवाम्
भास्वत्कोटितनुप्रभां स्वजनहृद्धान्तापहां तापहाम् ।
सीतां कोटिशरच्छशिछवियुतां श्रीरामपार्श्वेस्थिताम्
वन्देराघवराजपट्टमहिषीं माधुर्यसीमामुखीम् ॥२॥

रामानन्दमहं वन्दे श्रीरामांशाऽवतारकम् ।
आचार्याणां शिरोरत्नं मंत्रराजप्रचारकम् ॥३॥

सो०-

वन्दौ सीताराम, भरत लखण रिपुहन सहित ।
सरयू अवध सुधाम, सकल संत हनुमंत गुरु ॥१॥
वन्दौ देव गणेश, भक्ति भारती शिव शिवा ।
रामायण श्रुति शेष, कुम्भजादि मुनि राम रत ॥२॥
जय जगजलधिजहाज, भक्ति प्रपत्ति सुनिधि भरित ।
श्रीसम्प्रदा दराज, कर्णधार आचार्य जय ॥३॥

एक समय कुम्भज ऋषिराजू । करि प्रभात हवनादि सुकाजू ॥
बैठे आश्रम शिष्यन पाहीं । रामतत्व उपदेश कराहीं ॥
मुख्य शिष्य तेहि समय सुहाये । आय सुतीक्षण पद शिरनाये ॥
बैठे गुरु सम्मुख कर जोरी । पर उपकार कृपामति बोरी ॥
होनहार कलिमहँ नर जानी । अल्पायुषी अधम अभिमानी ॥
विषयविलीन विमुख रघुवीरा । सब विधि बुडे भवनिधि नीरा ॥
तिन सुखकारण तारण काजू । पूछे परम उपाय जहाजू ॥
सुनिय सिन्धु शोषक मम स्वामी । करुणाकर सर्वज्ञ अरामी ॥
कलियुग नर ह्वै हैं अति मूढा । वेद विमुख पातक आरूढा ॥
तिनकर जेहि उपाय कल्याणा । होइ कहिय सोइ कृपा निधाना ॥
सुनत अगस्त्य सुतीक्षण वाणी । धर्म प्रश्न परमारथ सानी ॥
आखर अल्प अर्थ विस्तारा । भे प्रसन्न मन मुदित उदारा ॥

दो० -

बोले वचन सुतीक्षणहिं, अति सराहि सुख पाय ।
पर उपकारी कलशभव, शिष्य हियहिं हर्षाय ॥१॥
धन्य सुतीक्षण धन्य तुम, पर उपकार प्रवीण ।
कीन्ह प्रश्न अतिशुचि सुखद, कारक कलिमल क्षीण ॥२॥

कहौं सुनहु इतिहास सुहावा । जो सनकादिक मोहि सुनावा ॥
बडभागी सुनिवर मतिभारी । विधिसुत नारद जग उपकारी ॥
लोक विलोकि लोग अघलीना । वेद विमुख विमूढ बहु दीना ॥
तब चिन्तत तिनकर कल्याणा । दिव्यधाय गे मुनि मतिमाना ॥
तहाँ महा सिंहासन माहीं । बैठे प्रभु शिर छत्र सुछाहीं ॥
सिद्धिन सहित सिद्धि अवतंसा । वेद वन्दि वपु करत प्रशंसा ॥
सकल वरायुध वरतनु धारे । सेवहिं भवर पारषद प्यारे ॥
दिव्य विभूषण वसन सम्हारे । निज निज सेवा लिये सुखारे ॥
श्याम कामशत सुभग कृपाला । उर भुज राजिव नयन विशाला ॥
नख शिख दिव्य विभूषण भ्राजैं । दिव्य दुकूल पीत अति राजें ॥
वाम भाग वामा अभिरामा । शोभित सारस नयनी श्यामा ॥
युगल किशोर अखंड अनूपा । राजत सच्चित आनंद रूपा ॥

दो०-

अस आसीन अशेष जग कारण करुणाधाम ।
नारद नयन निहारी छवि, कीन्हेउ दंड प्रणाम ॥३॥
करि प्रणाम कर जोरि तन पुलकित गद्गद वैन ।
करन लगे अस्तुति अमल, नेह नीर भरि नैन ॥४॥

जय जगयोनि अयोनि अनूपं । विभु अव्यक्त व्यक्त तर रूपं ॥
नमो अनन्त स्ववश अविकारी । भव संभव पालन लयकारी ॥
जय जय प्रभु परमात्म स्वामी । रहित आदि मध्यान्त अरामी ॥
प्रभो विश्ववपु विश्व सुबन्धो । जय विश्वम्भर करुणा सिन्धो ॥
नाथ जीव पातक रत भारी । परे घोर संसार मझारी ॥
भ्रमत अमित कर्मन वश परिके । सहत दुसहु दुख बहुतनु धरिके ॥
धर्म विमुख आलस आधीना । विषय विवश मानस अतिदीना ॥
सुखहित करहिं उपाय अनेका । लहहिं न लेशहु सुख लब एका ॥
ते केहि युक्ति मुक्ति सुख सोवैं । केहि विधि धर्म निरतमति होवैं ॥
कृपासिंधु सोइ करिय उपाई । जेहि बिधि जीवन कर दुख जाई ॥
कहे धर्म वेदादिक माहीं । कष्ट साध्य नर करत सो नाहीं ॥
ताते अतिशय सुगम उपाऊ । कहहच नाथ निज भक्ति बढाऊ ॥

दो० -

वन्धन विविध विनाशकर, जीव मुक्ति दातार ।
जग रक्षक अस धम के, तुमहि बतावन हार ॥५॥
सुनि शुचि नारद की विनय, विहँसि वदन वर वैन ।
प्रीति सहित रसरङ्गमणि, बोले राजिव नैन ॥६॥

सुनिये मुनिवर अति बड़भागी । कहत आप जो जगहित लागी ॥
सो प्रथमहिं हम मन गुणिराखा । करब तुम्हार पूर अभिलाषा ॥
भरतखंड मंडित अनुरागा । तेहि मधि तीरथ राज प्रयागा ॥
प्रथित पुण्यथल वेदन माहीं । लेब अंश अवतार तहांहीं ॥
तुमहिं आदि निज नित्य समीपी । परिकर प्रेम प्रभाव प्रदीपी ॥
अवतीरण होई सबन समेता । युक्ति प्रचारब मुक्ति सुहेता ॥

जो भव वक्र चक्र शमनीया । वर्धक भाव भक्ति रमणीया ॥
सुगम सुसाधन बोध विधायक । सुखद धर्म पथ परम सहायक ॥
वेद शास्त्र वेदान्तन सारा । शुचि सन्तन आचरित अचारा ॥
तँह तुम सब अवतरि शुभदेशा । करिहौ मम मारग उपदेशा ॥
जे गहिहैं मम सत्यथ प्राणी । भक्ति समेत परमहित जानी ॥
ते बिनु श्रम संशय सुख खानी । लहिहैं सुगति सुधारस सानी ॥

छंद०-

सानी सुधारस नाथ वाणी सुनि सुमुनि नारद तहां ।
आनन्द-अम्बुधि मग्न मानस मिटि गये संशय महा ॥
बह प्रेम-अंबु-प्रवाह अंचक वपुष पुलिकावलि छई ।
अनुभक्त दृढव्रत हरि-वचन अभिलाष उर पूरण भई ॥१॥
पुनि जोरि कर कृतकृत्य श्रीपति पद पदुम शिर नाइकै ।
परधाम ते गवने परममुद छाय आयसु पाइकै ॥
सुर ब्रह्मलीन बजाय वीण सुगाय रघुवर गुण पगे ।
पूजित सुरासुर विधि-सुवन मुनि लोक तिहुँ विचरन लगे ॥२॥

सो०-

गवने देवऋषीश तब सुरमुनि वंदित मुदित ।
वसत रमत जगदीश दिव्यधाम रामासहित ॥४॥
करत जीव उद्धार, हरि नारद संवाद यह ।
भयो यथा अवतार, सुनहु सुतीक्ष्ण सो चरित ॥५॥

जब गत द्वापर पुण्य निधाना । गे निजलोक कृष्ण भगवाना ॥
तब प्रवेश कीन्हो कलिकाला । अधरम-वर्धक कठिन कराला ॥

भे पातक रत सव नर नारी । शौच अचार रहित अविचारी ॥
विमुख सुगति साधन-पथ नाना । निन्द्य मन्दमति पशुन समाना ॥
अल्पायुष सुखरहित अभागी । विषयी सन्त-संग परित्यागी ॥
बाढे जे नास्तिक चहु ओरी । तिन कहूँ जीति बाद बरजोरी ॥
आचारज श्रुतिमत-विज्ञाता । भगवत-धर्म सदा सुखदाता ॥
थापन यदपि किये जगमाहीं । पै नहिं बढत देखि तिनकाहीं ॥
तब हरि कृपा-सिंधु भगवाना । सत्यवचन कारक निज-बाना ॥
बढत विलोके अति कलिकाला । दुख दुर्मितियुत जीव बेहाला ॥
सुमिरि प्रथम निज गिरा उदारा । तब मन कीन्ह लेन अवतारा ॥
विधि नारद आदिक अनुगामी । सबहिं दिये अनुशासन स्वामी ॥

दो०-

चारिसहस शत चारि भो, गत कलिकाल मलीन ।
तेहि अवसर नरलोक हरि, निवसनहित चित दीन ॥७॥
गङ्ग यमुन संगम जहां, तीरथ-राज प्रयाग ।
पुण्यरूप जेहि पूजहीं, देव सहित अनुराग ॥८॥

तहां महाभागी अनुरागी । कान्यकुब्ज द्विजजाति अदागी ॥
पुण्यसदन शुभ नाम सुकर्मा । भक्तियोगयुत रत निजधर्मा ॥
नाम सुशीला तिनकी नारी । मनहुँ अदिति कश्यपकी प्यारी ॥
तासु हिये हरि कीन्ह निवासा । विगत भये पूरण दशमासा ॥
आयो माघ अमोघ पुनीता । पक्ष असित सातैं रवि प्रीता ॥
नखत सुचित्रा चारु विचित्रा । सिद्धयोग युत परम पवित्रा ॥
प्रभु प्रगटन कर अवसर जानी । सब ग्रह योग भये शुभ थानी ॥
विमल सलिल निर्मल नभ आसा । शुचि संतन मन मोद हुलासा ॥

मधुर बयारि बहै सुखदेनी । दुग्धधार चलि ललित त्रिवेणी ॥
सातदण्ड दिन आयो जबहीं । कुंभ लग्न संभव भइ तबहीं ॥
प्रगटे रवि इव करुणा-कन्दा । संत सरोजन प्रद आनन्दा ॥

दो०-

जग निवास जगदीश हरि, जगत् शरण दातार ।
जनरक्षण-प्रण-दक्ष अति, लीन्ह मनुज-अवतार ॥९॥

छंद-

अवतरे परेशा मनहुँ दिनेशा सुत द्विजेश तनुधारी ।
पूजित शिव शेषा शुभ उपदेशा तारकमंत्र-प्रचारी ॥
कलिकलुष-विनाशी प्रेमप्रकाशी सुखराशी दुखहारी ।
प्रभु इच्छाचारी स्ववशविहारी जगजीवन-उपकारी ॥३॥
रक्षक श्रुतिसेतू सत्कुलकेतू वंदित सदा अमाना ।
निगमादि सुगीता चरित पुनीता भवभय शमन निदाना ॥
सुरसेवितचरणा चातुरवर्णा शरणद कृपानिधाना ।
प्रद मणिरसरङ्गहिं सियवरसङ्गहिं प्रेमभक्ति-वरदाना ॥४॥

दो०-

अघघालक गो सन्त द्विज, पालक कृपा अगार ।
बालक वपु रोवन लगे, खलन रुलावनहार ॥१०॥

सुनि मृदुवदन रुदन सब नारी । गाइ उठीं सोहिलो सुखारी ॥
तब द्विजवर मन मोद अगाधा । किये कर्म नांदीमुख श्राधा ॥
दिये बहुत सम्पदा लुटाई । बजन लगी आनन्द-बधाई ॥

द्विज-जाया सजि मंगल थारा । आई सब द्विजराज अगारा ॥
करहिं निछावर देहिं अशीशा । चिरजीवहु सुत हे जगदीशा ॥
भो अस जन्म-महोत्सव भारी । किये छठे दिन छठी सुखारी ॥
होत गान आनन्द बधावा । बरहों नामकरण दिन आवा ॥
ज्ञाता गणक पुरोहित आये । विधिसम जन्मपत्र लिखि लाये ॥
मंगल कर्म सविधि करवाये । रामानन्द सुनाम सुनाये ॥
लखि लक्षण अद्भुत अनुरागे । फल कुंडली सुनावन लागे ॥
सुनहु द्विजेश सुकृत परिपाके । सकल विलक्षण लक्षण याके ॥
होइहै अति आयुषी अरोगी । आचारज लक्षणयुत योगी ॥

दो०-

विशद वेद वेदान्त सत्, शास्त्र समेत पुराण ।
ज्ञाता वक्ता धर्म को, कर्त्ता कर्म महान् ॥११॥
कीरतिमान उदार अति, ज्ञानवान गुणवान ।
नीतिमान मतिमान पुनि, ह्वै हैं यशी निदान ॥१२॥

धर्म-सेतु-रक्षक उपकारी । भवनिधि बूढ़त जीव उधारी ॥
वैष्णव धर्म सदा उपदेशी । राम भक्त पर प्रेम विशेषी ॥
पूज्य सबहिं प्रिय इन्द्रियजेता । जगद्गुरू मुनि शील-निकेता ॥
चारिउ वर्ण इतर जिय-जाला । शरणद सब पर परमकृपाला ॥
समदरशी विरक्त श्रीमन्ता । सत् संप्रदा विवर्धनवन्ता ॥
आनन अम्बुज सदा प्रसन्ना । अमित दिव्य लक्षण सम्पन्ना ॥
कँह लागि गुणगण कहैं द्विजेशा । तव सुत भयो मनहुँ परमेशा ॥
सुनि सुत-गुण दंपति द्विजराजा । भये मुदितमन सहित समाजा ॥
दिये दान बहु मान समेता । गये पुरोहित आशिष देता ॥

नित नव मंगल द्विजवर गेहा । लालत सुवनहिं सहित सनेहा ॥
अन्नप्राशनी आदि उछाहा । करत भये सादर द्विजनाहा ॥

दो०

यहि विधि रामानन्द प्रभु परम प्रेम आधीन ।
सब शिशुलीला ललित करि, मातुपितहिं सुखदीन ॥१३॥
पांच वर्ष बीते विमल, जबही बाल विनोद ।
किये द्विजाति स्वजातियुत, मुंडन मंडित मोद ॥१४॥

तब लै बहु महिसुर-सुत संगी । वीथिन विचरहि बाल उमंगी ॥
खेलहिं मिले बालकन माहीं । रघुवर लीला ललित कराहीं ॥
जस लखि प्रभु पूजन पितुपाहीं । तैसहि करि हरि ध्यान धराहीं ॥
वपु बुधि विमल बढैं केहि भांती । जैस शशि पाय पक्ष सित राती ।
आठ वर्ष के भे मतिमाना । भयो यज्ञ उपवीत विधाना ॥
तबते ब्रह्मचर्य व्रत लीन्हे । पढहिं विशद विद्या चित दीन्हे ॥
पढे प्रयाग वर्ष जब चारी । तब नहिं पंडित परेउ निहारी ॥
पितहिं प्रबोधि बोधसुख राशी । पुनि आये करुणाकर काशी ॥
तहां वेद वेदांत विशेषा । सकल किये करतल अवशेषा ॥
सोरह वर्ष विमल वय जानी । करन चहे सद्गुरु विज्ञानी ॥
जोहि जानि जगजलधि-जहाजू । श्रीसंप्रदा-नालिन दिनराजू ॥
गुरू राघवानन्द महाना । रामभक्त विज्ञान-निधाना ॥
आत्म अरपि लिये उपदेशा । तारक राम-मन्त्र परमेशा ॥

दो०-

दोउ महान मिलि सोहहीं, सम वशिष्ठ रघुनाथ ।
उपमा अपर समुद्र जस, सहित ब्रह्म द्रव पाथ ॥१५॥
स्वामिहिं सेवा वश किये रामानन्द उदार ।
दै सरवस गुरु रामपुर, गवने दशयें द्वार ॥१६॥

तब श्रीरामानन्द दिनेशा । उदित भये तारक उपदेशा ॥
छायो लोक प्रताप प्रकाशा । कलि करतब पातकतम नाशा ॥
घोर कुपंथ चोर विलखाने । कुमुद कर्मकांडी सकुचाने ॥
सोहं वादो तारा तय भे । नास्तिककुल उलूक लुकि लय भे ॥
रामभक्त सरसीरुह वृन्दा । रवि लखि भे विकसित सानन्दा ॥
श्रद्धा, विरति भागवत धर्मा । लहे कोक कोकी सुख परमा ॥
जब ते रामानन्द सुपासी । निवसे जगत् प्रकाशी काशी ॥
तब ते भये सकल सुखराशी । काशी काशी ईश निवासी ॥
नित प्रति रामकथा सत्संगा । कहत बहत जनु दूसरि गंगा ॥
तारत जीवन मरत महेशा । तारत सतन स्वामि उपदेशा ॥
मरे खलन कहूँ भैरव सोधें । प्रभु दै दंड जियत परबोधैं ॥
गुण अनन्त तिनके सुखकारी । सब वर्णैं असको मति भारी ॥

छंद-

भारी प्रभाव प्रताप रामानन्द को को कहि सकै ।
जो परम प्रभु अवतार शारद वदत जस जाको जकै ॥
जे गणक गुण प्रथमहिं सुनाये कुण्डली गाये जबै ।
ते प्रकट लक्षण जग 'विलक्षण देखिए दूने सबै ॥५॥
जय धन्य रामानन्द जगगुरु लोक में जाकी कृपा ।
श्रीरामभक्त अशेष वेष विलोकि खल खाते त्रपा ॥

जेहि सम्प्रदाय सुआय दुखगत विमुख सब शुभ अंगहू ।
भो सुखी सीतारामशरण कहाय मणि रसरङ्गहू ॥६॥

सो०-

राम लियो अवतार, रामानन्द कहायके ।
सो सब चरित उदार, कहेउ सुतीक्षण गायके ॥६॥
प्रभु अनुसाशन पाय, विधि शिव नारद आदि दै ।
अवतीरण भे आय, जेहि विधि अब सो यश सुनो ॥७॥

भये प्रकट परिकर हरि प्यारे । श्रीसम्प्रदा प्रचारनहारे ॥
जाननवारे गति हरि मन की । कारक शिर घरि आज्ञा तिनकी ॥
विधि नारद शिव सनतकुमारा । कपिलदेव मनु भूप उदारा ॥
तिमि प्रह्लाद जनक अरु भीषम । बलि शुकदेव रमा तैसहिं यम ॥
ये तेरह प्रगटे जगमाहीं । पाय सु प्रभु अनुशासन काहीं ॥
भये स नाना वरण विनीता । नाना देशन किये पुनीता ॥
नखत कृत्तिका कातिक पूनु । शनि धन लग्न भये द्विज-सूनु ॥
प्रथम आय अवतरे विधाता । नाम अनन्तानन्द विख्याता ॥
पढे वेद वेदान्त द्विजाई । सुमरि स्वरूप शिष्य भे आई ॥
सिद्ध परम प्रेमी रघुनाथा । सियजू हाथ घरे जिन्ह माथा ॥
रामानन्द शिष्य वर सोई । जेहि समान जग और न कोई ॥
पुनि वैशाख कृष्ण गुरुवारा । तिथि नवमी वृष लगन उदारा ॥

दो०-

मुनि नारद द्विजवंश महुँ, भये सुरसुरानन्द ।
श्रीरामानंद शिष्य निज, कीन्हे करुणा-कन्द ॥१७॥

सन्त प्रसाद प्रभाव विद्, प्रथमहिं पाये स्वाद ।
सोइ याहू तन सत करी, महिमा महाप्रसाद ॥१८॥

माधव शुक्ल नौमि भृगु दिवसा । तुला लग्न शतभिषा सुनिवसाः ॥
सुखानन्द भे शंभु सुजाना । शीलवान मतिमान महाना ॥
आचारज गुरुभक्ति निधाना । निरत मंत्र मंत्रार्थ विधाना ॥
तीज कृष्ण वैशाख सुमासा । मेष लग्न दिन शुक्र सुवासा ॥
व्यतीपात अनुराधा माहीं । सनतकुमार धरे तनकाहीं ॥
भयो नाम नरहरियानन्दा । रामभक्त कुल कैरवचन्दा ॥
तिमि सोइ मास कृष्ण बुध सातैं । कर्क लग्न अरु मूल मिलातैं ॥
योगानन्द कपिल भे आई । योग-निधान निरत रघुराई ॥
कारक रामतत्त्व-उपदेशा । परम भागवत धर्म हमेशा ॥
प्रभु के शुभ प्रशिष्य सुखकन्दा । दीन्ह मंत्र अनन्तानन्दा ॥
चैत्र लग्न धन पूरणमासी । ध्रुव बुध उत्तर फाल्गुनि खासी ॥
मनु महाराज अवतरे पीपा । रामानन्द शिष्य कुलदीपा ॥

दो०

जगत विदित सियरामपद पीपा प्रेम प्रताप ।
लगी भागवत भुजन महँ जिन्ह को लाई छाप ॥१९॥
असित अष्टमी चैत्र की सिंह लग्न कुज वार ।
नखत मृगशिरा जानिये शोभन योग उदार ॥२०॥

नाम कबीर भये प्रहलादु । छाके रामनाम-रस-स्वादु ॥
राम-भक्त वेदान्तन ज्ञाता । काशीवास निरत जन-त्राता ॥
छठि वैशाख असित शशि वारा । मूल परिघ तनु कर्क उदारा ॥

जन में आय जनक महाराजा । भावानन्द सुनाम दराजा ॥
निरत राम सेवा मतिमाना । गूढ़ प्रेम विज्ञान-निधाना ॥
माधव कृष्ण द्वादशी काहीं । पूर्वा तुला भानुदिन माहीं ॥
सेनभक्त भीषम अवतारा । भये रामपद प्रेम अगारा ॥
सदा सन्त सेवा मति पागी । भक्तियोग युत अति बड़भागी ॥
तौनै मास पक्ष वृश्चिक शनि । आठैं पूर्वाषाढ़ नखत भनि ॥
बलि अवतीरण भे अतिदाता । धनानाम जग धन्य विख्याता ॥
सुमति सन्त सेवा लय लीना । सदाचार गुरुभक्त प्रवीना ॥
चैत्र असित एकादशि काहीं । सोम घनिष्ठा धनतनु माहीं ॥

दो०-

भे शुकदेव सुज्ञान निधि, नाम गालवानन्द ।
अदेशक वेदान्तविद्, योगी रत रघुचन्द ॥२१॥
चत्र शुक्ल चित्रा दुइज, भृगुदिन लग्न सुभेष ।
जनमत भे यमराज जग, रचि रैदास सुवेष ॥२२॥

रामदास शासन मतिदासी । सदा भागवत धर्म प्रकासी ॥
निष्किञ्चन उदार गुरू सेवी । भावुक रामतत्व को भेवी ॥
कर्कलग्न सित चैत्र त्रयोदशि । ध्रुव गुरुदिन उत्तरफाल्गुन लसि ॥
पद्मावती पद्मजा-अंशा । अवितीरण भइ तिय अवतंसा ॥
विषय विगत रघुवर रति सानी । गुरुपद भक्ता तन मन बानी ॥
परम पुरुष गुनि रामबिहारी । अन्य सबै जग जान्यो नारी ॥
ये प्रभु मुख्य शिष्य मतिमाना । तरुण तरणि सम तेज निधाना ॥
नाना वरण सु नाना देशा । प्रगटि आय लीन्हे उपदेशा ॥
इनके चरित विमल विधि नाना । भक्तमाल यशजाल प्रमाना ॥

सहित तेरहैं शिष्य अरामी । राजत श्रीरामानंद स्वामी ॥
शिष्य शिष्य उपशिष्य समेता । शोभित पूजित कृपा-निकेता ॥
जगद्गुरू आचारज-भूपा ! रामानन्द राम के रूपा ॥

छ०-

श्रीरामरूप अनूप रामानन्द स्वामी हैं सदा ।
शुचि ज्ञान दायक ध्यान लायक हरण मल माया मदा ॥
श्रीसम्प्रदाय बढ़ाय विरचे सेतु सम रघुनाथ के ।
जग जलधि से जीवन उतारे जलधि करुणापाथ के ॥८॥
जिन्ह नाम गावत चरण ध्यावत जीव विगत प्रयासही ।
प्रभु मनहि भावत भुक्ति मुक्तिहुँ लहत जन संशय नहीं ॥
गहि जासु तारकमंत्र मारग लहि अभय जन गाजहीं ।
भूलोक को भूषित किये वर वृत्ति मुनिसम राजहीं ॥९॥

सो०

शारद शशी समान, कीरति रामानन्द की ।
पावन पुण्य महान, हरनी पातक वृन्द की ॥६॥
रामभक्ति दातार, ज्ञान विराग विधायिनी ।
सुनतहि भली प्रकार, सुखद मोह तम हारिणी ॥७॥

अस प्रभु भगवत रामानन्दा । परम धर्म तनु जनु सुखकन्दा ॥
हिय विचार किय कृपा निकेतू । महि दिग्विजय करन के हेतू ॥
संग शिष्य परशिष्य अनन्ता । तिमि तिहुँ संप्रदाय बहुसन्ता ॥
आगे फहरत ध्वजा निशाना । तेहि पर लसैं वीर हनुमाना ॥
जय जय सियाराम धुनि छाई । चले विजयकर शंख बजाई ॥

प्रथम पूर्व जगदीश पधारे । शासन रघुवर भक्ति प्रचारे ॥
पुनि गे दक्षिण दिशि अभिरामा । रामेश्वर रंगादिक धामा ॥
तदुपरि पश्चिम दिशि प्रभु आये । द्वारिकादि लखि दुरित दुबाये ॥
पुनि उत्तर वद्रीपति पेखी । आज्ञा थापन किये विशेषी ॥
तिमि सब अन्तर के शुभदेशा । स्ववश स्वाभि कीन्हे उपदेशा ॥
जीति कुचादिन वेद विवादा । थापन करी धर्म मर्यादा ॥
हिंसा कर्म कांड रत जेते । किये भक्त नरसिंहके ते ते ॥

दो०-

चारवाक मतनिरत अरु, जैनी बोधी वाम ।
उच्छृंखल खल चेटकी, औरों नास्तिक आम ॥१३॥
खंडन किये कुपंथ सब, यथा योग्य दै दण्ड ।
सतमारग आने तिनहिं, करि उपदेश अखंड ॥२४॥

चारिउवर्ण आश्रमन माहीं । कीन्हे रामभक्त सब काहीं ॥
राम मंत्र मन्त्रार्थ विधाना । यथा योग्य दीन्हे मतिमाना ॥
यहि विधि करि दिग्विजय उदंडा । थापी रघुपति भक्ति अखंडा ॥
प्रभु जिहि हेतु लियो अवतारा । सत्यसंध सोइ कियो प्रचारा ॥
शिष्यन मध्य विराजहि कैसे । द्वादश भानु सहित हरि जैसे ॥
पुनि तारागण सज्जन वृन्दा । रामानन्द सु पूरणचन्दा ॥
चरणाश्रित जन कुमुद चकोरा । विकसित सुखी लखहिं प्रभु ओरा ॥
बहुतकाल वपु धारण कीन्हे । भूमँह भक्ति भावभरि दीन्हे ॥
जासु तिलक विलोकि जनभाला । होत जगत यमदूत विहाला ॥
जीवन्ह राम उपासक कारी । विदित विश्व मंगल वपुधारी ॥
रामानन्द प्रताप अपारा । को कवि लहै कथन करि पारा ॥

तदपि यथा मति अति सुखदाई । रामानन्द विजय मैं गाई ॥
अस प्रभु जगपावन वपुधारी । कृपासिंधु दासन हितकारी ॥

दो० -

आचारजवर दिग्विजय, जे जन सुनहिं सप्रेम ।
विजय विवेक विभूति ते, लहहिं भक्ति युतक्षेम ॥२५॥
रामानन्द उदार अति, कलिमल नाशनहार ।
सेवतभक्ति समेतशुभ, मुक्ति मुक्ति दातार ॥२६॥

अस प्रभु जग पावन वपुधारी । कृपासिन्धु दासन हितकारी ॥
दुराधर्ष अति दृष्टन काहीं । सज्जन सेवन योग्य सदाहीं ॥
ताते तासु जन्मदिन माहीं । जन्म महोत्सव रचै उछाहीं ॥
प्रति संवत विधि जाननहारे । करैं सकल वैष्णव हरिप्यारे ॥
पूजासाज सँवारि सचेता । पूजै स्वामिहिं शिष्य समेता ॥
नाच गान आनन्द बधाई । व्रत अरु स्तुतिहुं करै मनलाई ॥
जन्म कथा मम कथित सुहाई । सुनै सुतीक्षण जन कहवाई ॥
तजि आलस यहि भाँति सचेता । करै महोत्सव भक्ति समेता ॥
सो गुरुभक्त रामप्रिय होई । लहि हैं सकल मनोरथ सोई ॥
सुनत सुतीक्षण गुरुवर वाणी । रामानन्द कथामृत सानी ॥
अति प्रमुदित पुनि पुनि पुलकाहीं । बहै प्रेमजल नयनन माहीं ॥
पुनि कर जोरि बैन सुखदाई । बोले कुम्भज पद शिर नाई ॥

दो०-

धन्य आप प्रभु धन्य अति, कथा यथारथ गाय ।
आचारज अवतार की, दीन्ही मोहि सुनाय ॥२७॥

जन्म कर्म पावन परम, सुन्यो सुयश शुभ गाथ ।
अब पूजनकी विधि सकल, अरु स्तुति कहिये नाथ ॥२८॥

जग उपकारी आप महाना । दयावान मतिमान मुजाना ॥
ताते कहिये सविधि बखानी । पूजन करि तरिहैं भव प्राणी ॥
सुनत अगस्त्य सुतीक्षण वैना । बोले वचन उमगि उर चैना ॥
तीक्षण सुमति सुतीक्षणतोरी । पर उपकार प्रीति नहिं थोरी ॥
ताते कहाँ सुनहु मतिमाना । आचारज पूजन सविधाना ॥
ताम्र पीठपर यंत्र बनावै । अथवा चन्दन सों लिखवावै ॥
वर्तुल ललित कमल तेरह दल । मध्य कर्णिका कलित लिखे भल ॥
लिखि षट्कोण यंत्र के माहीं । तहं आचार्यदेव वर काहीं ॥
यापै सहित अंग सुख कन्दहि । ध्यावै रवि सम रामानन्दहिं ॥
गौर वर्ण वपु बैठ सुखासन । चरण कमल नखधुति तम नाशन ॥
कटि काषाय दंड उपवीता । रोमराजि उर उदर पुनीता ॥
सुजन छाप सरचाप विराजै । सियवर नामावलि भलि भ्राजै ॥

दो०-

ऊरधपुंङ्गु सभाल श्री, तिलक द्वादशहु अंग ।
युगल तुलसिका माल गल, पुही प्रेम परसंग ॥२९॥

शुभ प्रबोध मुद्रा कर धारी । आनन चन्द्र ताप त्रय हारी ॥
हित उपदेशक सुधा सुवयना । कृपाविलोकनि राजिव नयना ॥
अस स्वरूप चिंतैं मनमाहीं । प्रेम सहित पूजै प्रभु काहीं ॥
शिष्यन थापै दलन सुजाना । दहिनावर्त पूर्वक्रम माना ॥
अनन्तानन्द सुरसुरानन्दा । तदुपरि सुखानन्द सुखकन्दा ॥

पुनि नरहरियानन्द सुदीपा । योगानन्द लिखै पुनि पीपा ॥
लिखे कवीरहि भावानन्दहिं । वैसेइ सेनाधना अमन्दहि ॥
बहुरि गालवानन्द प्रतापी । रमादास पद्मावति थापी ॥
प्रणव बीज युत इनके नामा । पुनि कहि आय नमो अभिरामा ॥
यहि विधि जानै सबके मंत्रा । तेइ लिखि पढि पूजै वर यंत्रा ॥
करि आवाहन आसन दाना । अर्घ्य पाद्य आचमन विधाना ॥
पुनि असनान वपन उपवीता । चन्दन भूषण सुमन पुनीता ॥

दो० -

धूप दीप नैवेद्य बहु, षटरस युत फल मूल ।
जल अचवन अरु वीटिका, आरति अंजलि फूल ॥३०॥
यहि विधि सव शिष्यन सहित, स्वामिहिं पूजि सप्रीत ।
करि प्रदक्षिणा जोरि कर, विनती करै विनीत ॥३१॥

जय जय जय श्रीरामानन्दा । हरि अवतार हरण दुख द्वन्दा ॥
जय त्रयताप शमन सुख कन्दा । राम भक्तकुल कैरव चन्दा ॥
आत्माराम काम मद जेता । योगिराज मुनि ऊरधरेता ॥
नमो सत्यव्रत दान्त महन्ता । जगदात्मा शुचि शान्त अनन्ता ॥
जयति जगद्गुरु करुणासिन्धो । आश्रित पाल दीन जन वन्धो ॥
दीक्षादान दक्ष कुल केतुं । भक्ति पक्ष रक्षक श्रुति सेतुं ॥
जयति मोह रावण रघुवीरं । भगवद्धर्म धुरंधर धीरं ॥
वर्धन विमल विराग सुवेशं । सम्प्रदाय श्री नलिन दिनेशं ॥
जय त्रिदण्डधर खल खग वाजं । नास्तिक मत्त हस्ति मृग राजं ॥
नमो राघवानन्द सुनन्दन । बौधी वामी बृन्द निकन्दन ॥
जैनी जलधर पटल प्रभंजन । सुमति सुगंधि वहन जन रंजन ॥

जयति दयानिधि दुर्गुण रंजन । पावन कीरति कलुष विभंजन ॥

दो०-

जयति पतित पावन प्रभो, जगत विदित गुणगाथ ।
जय जग जलनिधि सेतु कर, यथा सिन्धु रघुनाथ ॥३२॥

जयति प्रेमपथ पूरण पंडित । रामभक्त विज्ञान अखंडित ॥
चारवाक वन सघन धनंजय । जय आचारज जन अघगंजय ॥
आसमुद्र मुद्रित महि मंडल । जय कारक दिग्विजय अखंडल ॥
जय अमान मानद मुद मंडन । कुलिश कुधर पाखंड विहंडन ॥
जयति तरण तारण दुखदारण । जियपर करुणाकरण अकारण ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता नाशक । राम नाम जप यज्ञ प्रकाशक ॥
नमो मोक्षमग सुगम विधायक । सब विधि सुजन मनोरथ दायक ॥
जयति भक्ति विस्तारक सुखमय । अजित अगाध बोध तव जय जय ॥
तारक मंत्र प्रचारक स्वामी । शिष्य त्रयोदश सहित नमामी ॥
कर्म वचन मन शरण तुम्हारी । पाहि पाहि प्रणतारति हारी ॥
करुणा करि रसरंगमणी पर । राम भक्ति अविचल दीजे वर ॥

दो०-

करि यह अस्तुति अमलअति, चरण कमल मन लाय करै ।
दंडवत प्रणति पुनि, त्राहि त्राहि मुख गाय ॥३३॥
दै पुष्पांजलि तब करै, हरिदासन सतकार ।
बहुरि कथा सुनि नाम धुनि, नृत्यगान अनुसार ॥३४॥
यहि विधि रामानन्द की, पूजा यंत्र प्रकार ।
कहेउ सुतीक्षण जे करिहिं, ते उतरिहिं भवपार ॥३५॥

सुमति सुतीक्षण सुनि चरित, अरचन रीति अमन्द ।

गुरु कुम्भज पद नाय शिर, पूरे परमानन्द ॥३६॥

यह आचारज गुण अनुवादा । करण मोद मन हरण विषादा ॥
जे जन गावहिं सुनहिं सप्रेमा । ते पावहिं सुख मंगल क्षेमा ॥
गुरु आचारज चरण सनेहा । केवल प्रभु तोषण व्रत येहा ॥
ताते रामानन्दिन काहीं । करिबो उचित उछाह सदाहीं ॥
तासु जन्म दिन भे न अनन्दी । कहवावत श्री रामानन्दी ॥
तो मैं कहा कहौं तिन काहीं । समझि लेहिं सज्जन मन माहीं ॥
चार सहस्र त्रय शत कलिकाला । बीते प्रकटे परम कृपाला ॥
तबते विमल विराग सुवेषा । पूरेहु पुहुमी माहिं अशेषा ॥
नीचहु जासु अनुग कहवाई । पूजित होत साधु समताई ॥
ताहि भजिय हिय प्रेम बढाई । को नहि गुरुन भजे गति पाई ॥
दुइज चन्द्र शिव शिर संयोगा । कुटिल मन्द बन्दहिं सब लोगा ॥
श्रीयुत रामानन्द प्रभावा । केहि विधि जाय एकमुख गावा ॥

दो०-

मलिनहु मम वाणी विमल, भई स्वामियश गाय ।

यथा कुजल रसरंगमणि, गंग संग सुचिताय ॥३७॥

अनमिल बालक वत वयन, मम गुणगण युत नाहिं ।

जननि जनक सम सुजन सुनि, सुख पै हैं मनमाहिं ॥३८॥

सत संगति वश यहौ भलाई । भई हेतु सोउ देउँ सुनाई ॥

अवध महल मानसके हंसा । गुरु आचार्य निष्ठ अवतंशा ॥

कृपा पात्र श्रीशीलमणी के । सीताशरण सखा सियपीके ॥

तिन निजअनुज-ढीठ मोहिजान्यो । कनक भवन असवचन बखान्यो ॥
मुनि कुम्भज स्वसंहिता माहीं । खंड भविष्य सुतीक्षण पाहीं ॥
रामानन्द जन्म यश गाये । करहु ताहि भाषा मन लाये ॥
जायें समझि परै सव काहीं । गावहिं स्वामि जन्मदिन माहीं ॥
यहिविधि आरज आज्ञा पाई । करि रसरंगमणी सुढिठाई ॥
विरचि दियो दोहा चौपाई । सुजन सुधारहिं क्षमि चपलाई ॥
उनइस सौ पैतालिस साला । चैत राम नवमी मुदमाला ॥
अवध सरयु सिय कुंड समीपा । पूरण क्रियो कृपा रघुदीपा ॥
जय जय अवध जननि जय सरजू । देहि निबास भक्ति सियवरजू ॥

दो०-

जय जय श्री आचार्यवर, स्वामी रामानन्द ।
करिय कृपा निज जानि जन, हरिय सकल दुखद्वन्द ॥३६॥
जय जय जय गुरुदेव श्री कामदेन्द्रमणि मोर ।
सवविधि सुधरै रावरे, कृपा नयन की कोर ॥४०॥
आचारज वर चरित मणि, अवली अति अभिराम ।
रामानन्दयशावली, भया ताहित नाम ॥४१॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रतारकमंत्रप्रचारक श्रीमदाचार्यवर्य चारु चरित
चिन्तामणि मंजरीक रसरंगमणि मति सूत्र पोत कलिमल तमनाशनि निर्मली
श्रीरामानन्दयशावलीसमाप्तः ।

पूजामंत्र :-

नमआचार्यवर्याय रामानन्दाय धीमते ।
मोक्षमार्ग प्रकाशाय चतुर्वर्गप्रदाय च ॥